

पाठ-सत्रह आजाद हिन्द फौज



दरअसल, वक्त, प्रेरणा, चमत्कारी, घोषणा, कार्यालय, पुश्तैनी, एकत्र, हित, समृद्ध, नारा, कार्यभार, भव्य, कमान, अवकाश, उपहार, सुचारु, आशीर्वाद, ठिठकना।

मोइराड्
14 अप्रैल, 2004

प्रिय बेटी,

खुश रहो।

तुम्हारे पत्र का उत्तर अब तक पहुँच चुका होगा। यह पत्र मैं अपनी ओर से लिख रहा हूँ। यों ही मन हो आया कि तुम्हें कुछ बातें बताऊँ। दरअसल आज सुबह मैं तुम्हारा सन्देश पहुँचाने तुम्हारी सहेली, रेणु के घर गया था। वहाँ से लौटते वक्त मेरे कदम 'नेताजी सुभाष मेमोरियल' के सामने ठिठक गए। मैं आन्तरिक प्रेरणा से मुख्य द्वार से होता हुआ सुभाषचन्द्र बोस की मूर्ति के सामने पहुँच गया। भारतीय इतिहास के उस महान स्वाधीनता-सेनानी और आजाद हिन्द फौज के चमत्कार कार्यों को याद करते हुए मैं काफी देर वहाँ रहा।



आजाद हिन्द फौज ने 18 मार्च, 1944 को म्यानमार की ओर से मणिपुर में प्रवेश किया था। कर्नल शौकत अली मलिक उसका नेतृत्व करते थे। उन्होंने ही 14 अप्रैल, 1944 को मोइराड में तिरंगा झण्डा लहराया था और भारत की आजादी की घोषणा की थी।

स्वाधीनता प्रेमी मणिपुरी जनता ने आजाद हिन्द फौज की मुक्त हृदय से सहायता की थी। हेमाम थम्बालजाओ सिंह ने आजाद हिन्द फौज का कार्यालय बनाने के लिए अपना पुश्तैनी घर दान कर दिया था। दूसरे लोगों ने भोजन जुटाने एवं सूचनाएँ एकत्र करने का कार्य किया था। ऐसा इसलिए हुआ कि मणिपुर के लोग सुभाषचन्द्र बोस को भारतीय स्वाधीनता संघर्ष का प्रतीक मानते थे।

आजाद हिन्द फौज की स्थापना के विचार ने सर्वप्रथम 10 दिसम्बर, 1941 को ज्ञानी प्रीतम सिंह और कप्तान मोहन सिंह की भेंट से जन्म लिया था। यह भेंट उत्तरी मलाया के जित्रा नामक स्थान के समीप एक जंगल में हुई थी। इस भेंट के परिणामस्वरूप मोहन सिंह ने अपने 54 साथियों के साथ भारत की स्वाधीनता के लिए जीवन समर्पित करने का व्रत लिया था। उन्हें ही इस मुक्ति फौज का जी.ओ.सी (जनरल ऑफीसर कमांडिंग) बनाया गया था। जब जापानियों ने सिंगापुर विजय प्राप्त कर ली तो उन्होंने युद्ध में बन्दी बनाए गए भारतीय सैनिकों को मोहन सिंह को सौंप दिया। वे सभी आजाद हिन्द फौज में शामिल होकर, “इंकलाव जिन्दाबाद” और “आजाद हिन्दुस्तान जिन्दाबाद” के नारों से आकाश गुंजाने लगे।

सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज का कार्यभार सन् 1943 में सम्भाला था। उन्होंने सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज के सैनिकों की भव्य परेड की सलामी लेने के बाद इतिहास प्रसिद्ध नारा दिया था - “चलो दिल्ली, चलो दिल्ली”। आजाद हिन्द फौज का आदर्श था - “एकता, विश्वास और त्याग”। सुभाषचन्द्र बोस ने स्वाधीनता की लड़ाई में स्त्रियों की भागीदारी सुनिश्चय करने के लिए “झांसी रानी रेजीमेंट” भी बनाई थी। इसकी कमान कप्तान लक्ष्मी को सौंपी गई थी।

क्या तुम आजाद हिन्द फौज का पूरा इतिहास जानती हो ? यदि नहीं, तो तुम्हें जानना चाहिए। आजाद हिन्द फौज ने ही हर भारतवासी में अपने देश के लिए मर मिटने की भावना जगा दी। आजाद हिन्द फौज का इतिहास हमें अपनी मातृभूमि पर प्राण न्योछावर करने की प्रेरणा देता है।

तुम्हारी माँ ने तुम्हारे लिए नए कपड़े खरीदे हैं। मैं तुम्हारे लिए कुछ पुस्तकें लाया हूँ। इस बार अवकाश आने पर तुम्हें ये वस्तुएँ उपहार में मिलेंगी।

अपना अध्ययन सुचारु रूप से करती रहना और स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना।

तुम्हें हम दोनों का आशीर्वाद।

तुम्हारा पिता
एल.ब्रोजेन सिंह

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

दरअसल	=	असल में, वास्तव में।
सन्देश	=	समाचार।
चमत्कार	=	अद्भुत बात, करामात।
नेतृत्व	=	नायक या सरदार होने का भाव।
घोषणा	=	एलान करना।
कार्यालय	=	ऑफिस।
पुश्तैनी	=	जो कई पीढ़ियों से चला आता हो।
समृद्ध	=	उन्नतिशील, धनी, विशेष रूप से आता हो।
कमान	=	आदेश, हुक्म, फौजी इयूटी।
समर्पित	=	सौंपा हुआ, दिया हुआ।
शामिल	=	इकट्ठा, मिला हुआ।
न्योछावर	=	उत्सर्ग, बलिदान।
अवकाश	=	शून्य स्थान, छुट्टी।
उपहार	=	भेंट, सौगात।
सुचारु	=	व्यवस्थित ढंग से।

2. उत्तर दीजिए :

- (क) कब आजाद हिन्द फौज ने मणिपुर में प्रवेश किया था ?
- (ख) मणिपुर में प्रवेश करते समय आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व कौन कर रहा था ?
- (ग) १४ अप्रैल, १९४४ को मोइराड में क्या हुआ था ?
- (घ) हेमाम थम्बालजाओ ने आजाद हिन्द फौज के लिए क्या किया था ?
- (ङ) दूसरे लोगों ने आजाद हिन्द फौज के लिए क्या किया था।
- (च) मणिपुर के लोग सुभाषचन्द्र को क्या मानते थे ?
- (छ) ज्ञानी प्रीतम सिंह और कप्तान मोहन सिंह की भेंट कहाँ हुई थी ?
- (ज) मोहन सिंह ने कौन-सा व्रत लिया था ?
- (झ) जापानियों ने मोहन सिंह को क्या सौंप दिया ?
- (ञ) सुभाषचन्द्र ने कब आजाद हिन्द फौज का कार्यभार सम्भाला था ?
- (ट) सुभाषचन्द्र ने इतिहास-प्रसिद्ध नारा 'चलो दिल्ली' कब और कहाँ दिया था ?
- (ठ) आजाद हिन्द फौज का आदर्श क्या था ?
- (ड) आजाद हिन्द फौज का इतिहास हमें क्या प्रेरणा देता है ?
- (ढ) भारत की आजादी के लिए लड़ने वाले कुछ वीर सेनानियों के नाम लिखिए।
- (ण) कक्षा-अध्यापक के सहयोग से सुभाषचन्द्र बोस की संक्षिप्त जीवनी लिखने का प्रयास कीजिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

- प्रेरणा -----
- घोषणा -----
- पुश्तैनी -----
- एकत्र -----
- कार्यभार -----
- अवकाश -----
- उपहार -----

सुचारु -----

चमत्कारी -----

भव्य -----

4. तालिका को ध्यान से देखिए, पढ़िए और खण्ड “क” तथा “ख” के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
कर्नल शौकत अली मलिक मणिपुरी जनता ने आजाद हिन्द फौज की झांसी रानी रेजीमेन्ट की कमान आजाद हिन्द फौज का आदर्श था —	कप्तान लक्ष्मी को सौंपी गई थी। एकता, विश्वास और त्याग। उसका नेतृत्व कर रहे थे। मुक्त हृदय से सहायता की थी।

5. सही कथन चुनिए और लिखिए :

- (क) सुभाषचन्द्र महान स्वतन्त्रता-सेनानी थे।
(ख) सुभाषचन्द्र ने मोड़राड् में भारत की आजादी की घोषणा की थी।
(ग) कप्तान मोहन सिंह को मुक्ति फौज का जी.सी.ओ. बनाया गया।
(घ) सुभाषचन्द्र ने आजाद हिन्द फौज का कार्यभार सन् १९४३ में सम्भाला था।
(ङ) आजाद हिन्द फौज की कमान भी कप्तान लक्ष्मी को सौंपी गई थी।

6. ध्यान से पढ़िए, सोचिए और समझिए :
- तुम्हारे पत्र का उत्तर अब तक पहुँच चुका होगा ।
- अब घर में तोमचौ काम करता होगा ।
- इस समय मेमचा काम करती होगी ।
- इस प्रकार के वाक्यों में क्रिया के होने में सन्देह का बोध होता है ।